पाठ्यपुस्तक : क्षितिज भाग 2 (गद्य खंड)

नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)

पाठ का परिचय

'नेताजी का चश्मा' स्वयं प्रकाश की एक भावप्रधान कहानी है, जिसमें कहानी के नायक कैप्टन चश्मेवाले के माध्यम से यह समझाया गया है कि यदि मन में श्रद्धा और देशप्रेम की भावना हो तो देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्मों से देश की सेवा कर सकता है। उसे अपनी देशभक्ति को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं होती, वरन् वह तो स्वयं सबके सम्मुख उपस्थित हो जाती है। ऐसे ही देशभक्त और कर्तव्यनिष्ठ लोग देश का नवनिर्माण करते हैं। जहाँ ऐसे लोगों का सम्मान नहीं किया जाता, वरन् उनका मज़ाक बनाया जाता है, वह देश कभी प्रगति नहीं कर सकता; अतः सभी को उनका भरपूर सम्मान करना चाहिए।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **हालदार साहब**– • पान खाने के शौकीन • सामाजिक सरोकार रखने वाले • संवेदनशील • जिज्ञासु और कौतुकपूर्ण • देशभक्त और देशभक्तों का सम्मान करने वाले • जीवन-मूल्यों की स्थापना के पक्षधर • भावुक • देशभक्तों की उपेक्षा से दुःखी।
2. **पानवाला**– • खुशमिज़ाज़ • पान का व्यसनी • असभ्य • व्यंग्यबाण चलाने में कुशल • भावुक और सहृदयी।
3. **कैप्टन (चश्मेवाला)** • ग्राहक का सम्मान करने वाला • देशभक्त • देशभक्तों के प्रति श्रद्धावान् • पागलपन की सीमा तक श्रद्धावनत • कर्मनिष्ठ • लोगों का अत्यधिक प्रिय • सुभाषचंद्र बोस की देशसेवा से अभिभूत/प्रेरित।

पाठ का सारांश

हालदार और नेताजी की प्रतिमा का परिचय– 'नेताजी का चश्मा' स्वयं प्रकाश द्वारा रचित एक सशक्त एवं रोचक कहानी है। कहानी के एक पात्र हालदार साहब को हर पखवाड़े कंपनी के काम से एक कस्बे से गुज़रना पड़ता था। कस्बा बहुत छोटा था। उसमें एक बाज़ार, एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का छोटा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका भी थी। नगरपालिका कस्बे में कुछ-न-कुछ कार्य करती रहती। इसी नगरपालिका के किसी प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। यह कहानी उसी प्रतिमा से जुड़ी है। मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोंक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट (आवक्ष प्रतिमा)। प्रतिमा बहुत सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो····' वगैरह नारे याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। प्रतिमा में केवल एक चीज़ की कसर थी, जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का चश्मा नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके, तभी उन्होंने इसे देखा और उनके चेहरे पर एक कौतुकभरी मुसकान फैल गई। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा असली।

चश्मे की सराहना– हालदार साहब की जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई, तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है, वरना तो देशभक्ति भी आज के समय में मज़ाक की चीज़ होती जा रही है।

मूर्ति का चश्मा बदलना– दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से निकले तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वाह भई! क्या आइडिया है। मूर्ति अपने कपड़े नहीं बदल सकती, लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है। तीसरी बार फिर नया चश्मा लगा था।

हालदार साहब की आदत पड़ गई, हर बार कस्बे से निकलते समय चौराहे पर रुकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार जब कौतूहल अधिक ही जाग उठा तो पानवाले से ही पूछ लिया–"क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?"

कैप्टन चश्मेवाले का मूर्ति को चश्मा पहनाना और उसे बदलना–पानवाले ने बताया यह चश्मा कैप्टन चश्मेवाला बदलता है। हालदार साहब को बात कुछ समझ में आई। एक चश्मेवाला है, जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेताजी की बिना चश्मेवाली मूर्ति अच्छी नहीं लगती। इसलिए वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध कुछ फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है, लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उसे वैसे ही फ्रेम की आवश्यकता होती है, जैसा मूर्ति पर लगा है तो कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम–संभवतः नेताजी से क्षमा माँगते हुए–लाकर ग्राहक को दे देता है और बाद में नेताजी को दूसरा फ्रेम लौटा देता है।

पानवाले द्वारा चश्मेवाले का मज़ाक उड़ाना–हालदार साहब को यह सबकुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं विचारों में मगन, पान के पैसे चुकाकर चश्मेवाले की देशभक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए पानवाले से पूछ बैठे–क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है? या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही?

पानवाला मुसकराकर बोला– नहीं साब! वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है, पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं।

चश्मेवाले के प्रति हालदार साहब की जिज्ञासा और श्रद्धा– हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक् रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधीटोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए, एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं। फेरी लगाता है। हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए।

दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे और नेताजी की मूर्ति में बदलते हुए चश्मों को देखते रहे। कभी गोल चश्मा होता तो कभी चौकोर, कभी लाल तो कभी काला, कभी धूप का चश्मा तो कभी बड़े काँचोंवाला गोगो चश्मा···पर कोई-न-कोई चश्मा होता जरूर··· उस धूलभरी यात्रा में हालदार साहब को कौतुक और प्रफुल्लता के कुछ क्षण देने के लिए।

कैप्टन की मृत्यु और मूर्ति का चश्माविहीन होना– फिर एक बार ऐसा हुआ कि मूर्ति के चेहरे पर कोई भी, कैसा भी चश्मा नहीं था। उस दिन पान की दुकान भी बंद थी। चौराहे की अधिकांश दुकानें बंद थीं। अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर कोई चश्मा नहीं था। हालदार साहब को पानवाले ने बताया– साहब! कैप्टन मर गया। हालदार साहब दुःखी हो गए।

सरकंडे का चश्मा देख हालदार की आँखें भर आना– पंद्रह दिन बाद फिर उस कस्बे से गुज़रे। सोचा, मूर्ति तो होगी पर चश्मा न होगा। मन कुछ अनमना-सा था। लेकिन मूर्ति के सामने पहुँचकर वे ठिठक गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा था। वैसा ही जैसा बच्चे बना लेते हैं। यह दृश्य देखकर हालदार साहब की आँखें भर आईं।

शब्दार्थ

ओपन एयर सिनेमाघर = खुले में बनाया गया ऐसा सिनेमाहॉल, जिसमें छत नहीं होती। **एक ठो** = एक अदद। **उपलब्ध बजट** = खर्च के लिए मिला धन। **ऊहापोह** = असमंजस अथवा अनिश्चय की स्थिति। **बस्ट** = छाती तक बनी प्रतिमा। **कमसिन** = नाजुक, थोड़ी आयु का। **सराहनीय प्रयास** = प्रशंसा करने योग्य कोशिश। **लक्षित किया** = ध्यान दिया। **कौतुकभरी** = आश्चर्यपूर्ण। **आइडिया** = विचार। **रियल** = वास्तविक। **दुर्दमनीय** = जिसका दमन करना, दबाया या जीता जाना बहुत कठिन हो। **खुशमिजाज** = प्रसन्न रहनेवाला। **तोंद** = मोटा पेट। **थिरकी** = हिली। **बत्तीसी** = दाँतों की पंक्ति। **चेंज** = बदलना। **आहत** = दुःखी, घायल। **दरकार** = आवश्यकता। **ओरिजिनल** = वास्तविक। **द्रवित करनेवाली** = भावुक बनाने वाली। **पारदर्शी** = जिसके आर-पार देखा जा सके। **समक्ष** = सामने। **नतमस्तक होना** = सिर झुकाना। **अवाक्** = हक्का-बक्का। **प्रफुल्लता** = प्रसन्नता। **कौम** = जाति। **होम देना** = आहुति देना, बलिदान करना। **अटेंशन** = सावधान। **सरकंडा** = नरकट जाति का एक पौधा।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो···' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी, जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानि चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य या सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुकभरी मुसकान फैल गई। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल!

1. मूर्ति किस चीज़ की बनी थी–
(क) लकड़ी की (ख) मिट्टी की
(ग) संगमरमर की (घ) ताँबे की।

2. मूर्ति को देखकर क्या याद आने लगता था–
(क) 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो···'
(ख) जय हिंद
(ग) वंदे मातरम्
(घ) जय जवान, जय किसान।

3. मूर्ति में क्या कमी खटकती थी–
(क) सुंदर नहीं बनी थी
(ख) उस पर रंग नहीं किया गया था
(ग) वर्दी नहीं थी
(घ) उस पर चश्मा नहीं था।

4. मूर्ति में नेताजी कैसे लग रहे थे–
(क) मासूम और कमसिन (ख) धीर-गंभीर
(ग) क्रोधित (घ) हँसमुख।

5. 'बस्ट' किसे कहते हैं–
(क) बहुत बड़ी मूर्ति को (ख) बहुत छोटी मूर्ति को
(ग) सिर से आवक्ष मूर्ति को (घ) पूर्ण मूर्ति को।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग)।

(2) जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है; वरना तो देशभक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है। दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है।

(CBSE 2018, 23; CBSE SQP 2023-24)

1. जीप के आगे बढ़ने पर भी हालदार साहब का मूर्ति के बारे में सोचते रहने का कारण था–
(क) देशप्रेम की भावना
(ख) कस्बे में लगी मूर्ति का सौंदर्य
(ग) मूर्ति पर संगमरमर का चश्मा न होना
(घ) मूर्ति का रख-रखाव न होना।

2. हालदार साहब ने नागरिकों के प्रयास को बताया–
(क) उदारवादी
(ख) अकल्पनीय
(ग) प्रशंसनीय
(घ) बचकाना।

3. "दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे" इस वाक्य में 'उधर' शब्द किसके लिए संकेत है?
(क) कस्बे के लिए
(ख) चौराहे के लिए
(ग) नगरपालिका के लिए
(घ) उत्साही लेखक के लिए।

4. उन्होंने मूर्ति में क्या अंतर देखा?
(क) मूर्ति ने कपड़े पहने हैं
(ख) मूर्ति ने शाल ओढ़ी है
(ग) मूर्ति पर चश्मा बदल गया है
(घ) मूर्ति को पेंट कर दिया है।

5. **हालदार साहब जीप से कहाँ जाते थे?**
   (क) कस्बे में लगी मूर्ति देखने
   (ख) अपनी फैक्टरी का काम देखने
   (ग) अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने
   (घ) कंपनी के काम से कस्बे से आगे।

उत्तर— 1. (क) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (घ)।

(3) बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सबकुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुःखी हो गए। पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ख्याल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा···क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया।···और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे। ***(CBSE 2016)***

1. **बार-बार कौन सोच रहा था–**
   (क) नेताजी (ख) पानवाला
   (ग) हालदार साहब (घ) चश्मेवाला।
2. **हालदार साहब को किस बात का अफ़सोस है–**
   (क) लोग देशभक्तों पर हँसते हैं
   (ख) लोग देशभक्तों का सम्मान करते हैं
   (ग) लोग साफ़-सफ़ाई नहीं करते
   (घ) लोग आपस में लड़ते हैं।
3. **गद्यांश में युवा पीढ़ी के लिए क्या संदेश है–**
   (क) वह अपने देशभक्तों का सम्मान करे
   (ख) वह देश को साफ़-स्वच्छ रखे
   (ग) वह देशभक्तों की प्रतिमाएँ लगाए
   (घ) वह समाज की सेवा करे।
4. **'कैप्टन मर गया' में कैप्टन प्रतीक है–**
   (क) एक सैनिक का
   (ख) एक वीर और साहसी का
   (ग) एक देशभक्त नागरिक का
   (घ) एक रौबदार अफ़सर का।
5. **हालदार साहब ने ड्राइवर को क्या आदेश दिया–**
   (क) गाड़ी तेज़ चलाने का (ख) चौराहे पर न रुकने का
   (ग) चौराहे पर रुकने का (घ) गाड़ी धीरे चलाने का।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख)।

(4) लेकिन आदत से मज़बूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

1. **हालदार साहब किस आदत से मज़बूर थे–**
   (क) चौराहे पर आते ही मूर्ति को देखना
   (ख) हर समय पान चबाना
   (ग) नेताजी की मूर्ति को माला पहनाना
   (घ) गाड़ी तेज़ चलाना।
2. **मूर्ति की तरफ़ देखकर हालदार साहब ने क्या किया–**
   (क) मूर्ति को नमन किया
   (ख) गाड़ी रुकवाने के लिए चीखे
   (ग) मूर्ति को देखते ही रहे
   (घ) मूर्ति की तरफ़ से मुँह फेर लिया।
3. **मूर्ति के सामने जाकर हालदार साहब ने क्या किया–**
   (क) अटेंशन खड़े हो गए
   (ख) साष्टांग प्रणाम किया
   (ग) आँसू बहाने लगे
   (घ) मूर्ति को ध्यान से देखने लगे।
4. **हालदार साहब ने मूर्ति पर क्या देखा–**
   (क) मूर्ति की आँखों पर सरकंडे का चश्मा रखा था
   (ख) मूर्ति पर काँच का चश्मा लगा था
   (ग) मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया था
   (घ) मूर्ति पर रंग किया गया था।
5. **मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर हालदार साहब की क्या दशा हुई–**
   (क) वे दुःखी हो गए
   (ख) वे खुशी से नाचने लगे
   (ग) उन्हें बहुत क्रोध आया
   (घ) भावुकता में उनकी आँखें भर आईं।

उत्तर— 1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (क) 5. (घ)।

(5) पानवाले के लिए यह एक मज़ेदार बात थी, लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे लिखा 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' वाकई कस्बे का अध्यापक था। बेचारे ने महीने-भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा। बना भी ली होगी, लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए काँचवाला यह तय नहीं कर पाया होगा या कोशिश की होगी और असफल रहा होगा या बनाते-बनाते 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा। उफ़·····! ***(CBSE 2020)***

1. **पानवाले के लिए क्या बात मज़ेदार थी–**
   (क) मूर्तिकार मूर्ति पर चश्मा लगाना भूल गया
   (ख) मूर्तिकार एक मास्टर था
   (ग) मूर्ति बिना चश्मे की रह गई थी
   (घ) मूर्तिकार ने एक महीने में मूर्ति बना दी थी।
2. **हालदार साहब के लिए कौन-सी बात चकित और द्रवित करने वाली थी–**
   (क) मूर्ति बनाने वाला कस्बे का अध्यापक था
   (ख) मूर्ति बहुत सुंदर थी
   (ग) मूर्ति बहुत थोड़े समय में बनाई गई थी
   (घ) मूर्तिकार नेताजी का चश्मा बनाना भूल गया।
3. **मूर्तिकार कौन था–**
   (क) एक विदेशी कलाकार
   (ख) कस्बे का अध्यापक मास्टर मोतीलाल
   (ग) नगरपालिका का इंजीनियर
   (घ) कस्बे का एक कुम्हार।

4. **मूर्तिकार क्या तय नहीं कर पाया होगा–**
   (क) मूर्ति इतनी जल्दी कैसे पूरी की जाए?
   (ख) मूर्ति के लिए संगमरमर पत्थर कहाँ से लगाया जाए?
   (ग) मूर्ति के लिए पत्थर का पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए?
   (घ) मूर्ति पर कौन-सा चश्मा फिट किया जाए?
5. **हालदार साहब ने मूर्ति पर चश्मा न होने की क्या-क्या संभावनाएँ व्यक्त कीं? अनुपयुक्त कथन छाँटिए–**
   (क) मूर्तिकार तय नहीं कर पाया होगा कि पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए?
   (ख) चश्मा बनाने की कोशिश की होगी, लेकिन सफल नहीं हुआ होगा।
   (ग) चश्मा किसी ने चुरा लिया होगा।
   (घ) 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में टूट गया होगा।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(6) नहीं साब! वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फ़ोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं। हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक् रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। ***(CBSE SQP 2021; CBSE 2023)***

1. **पानवाले ने देशभक्त का मज़ाक क्या कहकर उड़ाया था? निम्नलिखित विशेषणों के आधार पर उचित विकल्प का चयन कर इस प्रश्न का उत्तर दीजिए–**
   I. लँगड़ा   II. बूढ़ा
   III. पागल   IV. मरियल
   विकल्प :
   (क) I, II   (ख) I, III
   (ग) I, IV   (घ) II, IV.
2. **हालदार साहब अवाक् क्यों रह गए?**
   (क) एक मरियल से बूढ़े आदमी को देखकर
   (ख) कल्पना से परे 'कैप्टन' नाम के विपरीत उसका हुलिया देखकर
   (ग) एक बूढ़े को लाठी पकड़े चश्मा लगाए गांधीजी के रूप में देखकर
   (घ) एक चश्मे वाले दुकानदार को इस रूप में देखकर।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) : पानवाले ने अपने मित्र कैप्टन के बारे में अनुपयुक्त भाषा का प्रयोग किया।
   कारण (R) : पानवाले में संवेदनशीलता का अभाव था।
   (क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) सही है और उसका कारण (R) भी सही है।
   (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
4. **'फ़ोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं'–हालदार के सम्मुख पानवाले द्वारा कहा गया यह कथन चश्मे वाले के प्रति दर्शाता है, उसकी–**
   (क) संवेदना   (ख) वेदना अनुभूति
   (ग) सहानुभूति   (घ) व्यंग्यात्मकता।
5. **ड्राइवर की बेचैनी का कारण था–**
   (क) देशभक्त कैप्टन में कोई रुचि नहीं होना
   (ख) भूख लगना और घर जाने की जल्दी
   (ग) उमस के कारण बेचैनी बढ़ना
   (घ) हालदार साहब को गंतव्य पर पहुँचाने की जल्दी।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'नेताजी का चश्मा' पाठ के लेखक का नाम है–**
   (क) रामवृक्ष बेनीपुरी   (ख) स्वयं प्रकाश
   (ग) यशपाल   (घ) प्रेमचंद।
2. **'नेताजी का चश्मा' कहानी किसके बारे में है–**
   (क) सुभाषचंद्र बोस के बारे में
   (ख) सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति के बारे में
   (ग) सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर लगे चश्मे के बारे में
   (घ) हालदार साहब के बारे में।
3. **कस्बे के विषय में सत्य नहीं है–**
   (क) कस्बा छोटा था
   (ख) वहाँ एक लड़कों का स्कूल था
   (ग) एक लड़कियों का स्कूल था
   (घ) एक तेल का कारखाना था।
4. **कस्बे के चौराहे पर किसकी प्रतिमा स्थापित थी–**
   (क) गांधीजी की   (ख) जवाहरलाल नेहरू की
   (ग) सुभाषचंद्र बोस की   (घ) भगत सिंह की।
5. **नेताजी की मूर्ति में क्या कमी थी–**
   (क) मूर्ति अच्छी नहीं बनी थी
   (ख) मूर्ति पर रंग नहीं किया गया था
   (ग) मूर्ति बहुत छोटी थी
   (घ) मूर्ति पर चश्मा नहीं था।
6. **मूर्ति किसने बनाई थी–**
   (क) हाईस्कूल के ड्राइंग मास्टर मोतीलाल ने
   (ख) हालदार साहब ने
   (ग) नगरपालिका के मूर्तिकार ने
   (घ) चश्मेवाले ने।
7. **मूर्ति पर चश्मा कौन लगाता था–**
   (क) हालदार साहब   (ख) पानवाला
   (ग) कैप्टन चश्मेवाला   (घ) इनमें से कोई नहीं।
8. **चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे–**
   (क) नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाने के कारण
   (ख) सैनिक होने के कारण
   (ग) नेताजी का साथी होने के कारण
   (घ) वह वास्तव में कैप्टन था।
9. **नेताजी ने क्या नारा दिया था–**
   (क) तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा
   (ख) जय जवान, जय किसान
   (ग) वंदे मातरम्
   (घ) अंग्रेज़ों भारत छोड़ो।
10. **चश्मेवाला मूर्ति पर चश्मा क्यों लगाता था–**
   (क) उसे नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति अच्छी नहीं लगती थी
   (ख) मूर्ति पर चश्मा लगाना उसकी आदत थी
   (ग) वह अपने चश्मों का प्रचार करना चाहता था
   (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

11. हालदार साहब को कौन-सा आइडिया अच्छा लगा–

(क) मूर्ति लगवाने का
(ख) मास्टर से मूर्ति बनवाने का
(ग) मूर्ति पत्थर की, चश्मा असली
(घ) प्रतिदिन नया चश्मा लगाना।

12. हालदार साहब ने कैप्टन चश्मेवाले के बारे में किससे पूछा–

(क) हलवाई से (ख) पानवाले से
(ग) फलवाले से (घ) सब्ज़ीवाले से।

13. चश्मेवाले के प्रति पानवाले की टिप्पणी कैसी थी–

(क) बहुत सुंदर (ख) सम्मानजनक
(ग) अपमानजनक (घ) सौहार्दपूर्ण।

14. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है, पागल!" यह किसका कथन है–

(क) हालदार साहब का (ख) पानवाले का
(ग) मूर्तिकार का (घ) चश्मेवाले का।

15. एक दिन मूर्ति चश्मा विहीन क्यों थी–

(क) कैप्टन मर गया था
(ख) कैप्टन ने मूर्ति पर चश्मा लगाना बंद कर दिया था
(ग) चश्मेवाला कहीं चला गया था
(घ) कैप्टन ने चश्मे बेचना छोड़ दिया था।

16. हालदार साहब दुःखी क्यों थे–

(क) शहीदों पर हँसने वाली कौम के बारे में सोचकर
(ख) नेताजी की मूर्ति पर चश्मा न होने के कारण
(ग) पानवाले की मृत्यु होने के कारण
(घ) कैप्टन के चले जाने के कारण।

17. कैप्टन कौन था–

(क) हालदार साहब (ख) पानवाला
(ग) चश्मेवाला (घ) इनमें से कोई नहीं।

18. हालदार साहब आज चौराहे पर क्यों नहीं रुकना चाहते थे–

(क) नेताजी की चश्मारहित मूर्ति नहीं देख सकते थे
(ख) उन्हें बहुत ज़ल्दी थी
(ग) आज चौराहे पर खतरा था
(घ) चौराहे पर भीड़ थी।

19. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसने लगाया था–

(क) किसी बच्चे ने (ख) पानवाले ने
(ग) चश्मेवाले ने (घ) हालदार साहब ने।

20. कौन-सी कौम अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है–

(क) जो खूब धन कमाती है
(ख) जो आपस में प्रेम से रहती है
(ग) जो शहीदों का सम्मान करती है
(घ) जो शहीदों का उपहास करती है।

21. हालदार साहब ने कैप्टन द्वारा नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाने के जो अनुमान लगाए उनमें कौन-सा सही नहीं है–*(CBSE 2021 Term-1)*

(क) उसे नेताजी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है
(ख) उसे अपने चश्मों का विज्ञापन करने के लिए मूर्ति उपयुक्त लगती होगी
(ग) उसे नेताजी की बिना चश्मेवाली मूर्ति आहत करती है
(घ) उसे लगता है कि नेताजी को बिना चश्मे के असुविधा हो रही होगी।

22. नेताजी की मूर्ति किससे बनी थी– *(CBSE 2021 Term-1)*

(क) लाल पत्थर से (ख) ग्रेनाइट से
(ग) संगमरमर से (घ) प्लास्टर ऑफ पेरिस से।

उत्तर–1. (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (ग) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (क) **11.** (ग) **12.** (ख) **13.** (ग) **14.** (ख) **15.** (क) **16.** (क) **17.** (ग) **18.** (क) **19.** (क) **20.** (घ) **21.** (ख) **22.** (ग)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : चश्मेवाले को कस्बे के लोग व्यंग्य में कैप्टन कहकर बुलाते थे। वह कभी भी नेताजी का साथी या आज़ाद हिंद फ़ौज का सिपाही नहीं रहा था। वह बेहद बूढ़ा और मरियल-सा था. लेकिन देशभक्ति के ज़ज़्बे से भरपूर था। वह सुभाषचंद्र बोस का अत्यंत सम्मान करता था। उनकी बिना चश्मे की मूर्ति को देखकर वह बेहद आहत था। यही कारण था कि वह अपनी ओर से एक चश्मा नेताजी की मूर्ति पर अवश्य लगाता था। उसके इसी कार्य को देखकर लोगों ने उसे नेताजी की सेना का कैप्टन कहकर मज़ाकिया सम्मान दिया।

प्रश्न 2 : 'वह लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में, पागल है पागल' कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तर : पानवाले की यह टिप्पणी बहुत अभद्र है। इससे हमारे मन में उसके प्रति क्रोध और घृणा की भावना उत्पन्न होती है। अपने इस कथन में उसने चश्मेवाले की देशभक्ति का मज़ाक उड़ाया है। इस प्रकार उसने देश और मानवीय मूल्यों का अपमान किया है। चश्मेवाला एक बूढ़ा और अपाहिज व्यक्ति था. ऐसे व्यक्ति का मज़ाक उड़ाना मानवता पर कलंक है।

प्रश्न 3 : नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर हालदार साहब भावुक क्यों हो उठे?

उत्तर : नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर हालदार साहब बेहद भावुक हो उठे। उनकी आँखें यह सोचकर उम्मीद से भर आईं कि जहाँ कैप्टन चश्मेवाले जैसे देशभक्तों का मज़ाक उड़ाने वाले पानवाले जैसे लोग मौज़ूद हैं, वहीं देशभक्तों की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले और महापुरुषों का सम्मान करने वाले लोग भी मौज़ूद हैं; क्योंकि कैप्टन के न रहने पर कस्बे के बच्चों ने नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगा दिया था। उन बच्चों की देशभक्ति और महापुरुषों का सम्मान करने की प्रवृत्ति देखकर हालदार साहब भावुक हो उठे।

प्रश्न 4 : कैप्टन मूर्ति का चश्मा बार-बार क्यों बदल देता था?

उत्तर : कस्बे के चौराहे पर बनी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति का चश्मा मूर्तिकार बनाना भूल गया। इस कमी को कैप्टन चश्मेवाला चश्मा लगाकर पूरी करता था। अगर उसके किसी ग्राहक को मूर्ति पर लगा चश्मा पसंद आ जाता था तो कैप्टन वह फ्रेम उतारकर ग्राहक को दे देता था और उसकी जगह दूसरा चश्मा लगा देता था। इस प्रकार मूर्ति पर लगा चश्मा बार-बार बदल जाता था।

प्रश्न 5 : महापुरुषों की मूर्ति के प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?

उत्तर : महापुरुषों की मूर्तियाँ हमारे लिए प्रेरणादायी होती हैं। उनके प्रति हमारा यह दायित्व है कि हम उनकी अच्छी प्रकार देखभाल करें। समय-समय पर उनकी साज़-सफ़ाई करें तथा उनका अपमान न होने दें। उनकी मूर्ति लगाते समय इस बात का भी ध्यान रखें कि मूर्ति उनकी परंपरागत छवि के अनुरूप ही हो।

प्रश्न 6 : नेताजी की मूर्ति लगाने के कार्य को सफल और सराहनीय प्रयास क्यों बताया गया है? मूर्ति में किस चीज़ की कमी थी?

उत्तर : नेताजी की मूर्ति लगाने के कार्य को सफल और सराहनीय प्रयास इसलिए बताया गया है; क्योंकि नेताजी की मूर्ति को देखकर लोगों में देश-प्रेम की भावना बलवती होती थी। नेताजी की मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' जैसे उनके नारों की याद आ जाती थी।

नेताजी की मूर्ति में कमी यह थी कि उनका चश्मा नहीं बनाया गया था। इस कमी की पूर्ति के लिए एक सामान्य और सचमुच का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था।

प्रश्न 7 : 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर कस्बे की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 'नेताजी का चश्मा' पाठ में जिस कस्बे का वर्णन हालदार साहब करते हैं, वह छोटा-सा कस्बा है। वहाँ एक छोटा-सा बाज़ार है, दो खुले सिनेमाघर भी हैं। कुछ ही लोगों के मकान पक्के हैं। कस्बे में दो स्कूल हैं। एक लड़कों के लिए, दूसरा लड़कियों के लिए। एक छोटा-सा सीमेंट का कारखाना भी है। कस्बे के बाज़ार में एक चौराहा है, जिस पर सुभाषचंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति लगी है।

प्रश्न 8 : जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को नहीं देखा था, तब तक उनके मानस-पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर : जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था, तब तक उनके मन में कैप्टन की कुछ और ही छवि रही होगी। उन्हें लगता होगा कि कैप्टन अवश्य ही कोई पुराना फ़ौजी होगा या नेताजी की सेना का सिपाही। वह स्वस्थ और लंबा-चौड़ा व्यक्ति होगा, साथ ही अत्यंत रौबदार और अनुशासित भी होगा। वह अपने सिर पर फ़ौजी टोपी ज़रूर पहनता होगा।

प्रश्न 9 : हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था, लेकिन बाद में तुरंत रोकने को क्यों कहा?

उत्तर : हालदार साहब ने पहले ड्राइवर को कस्बे के चौराहे पर जीप न रोकने का आदेश दिया था; क्योंकि वे सुभाषचंद्र बोस की बिना चश्मे की मूर्ति को नहीं देख सकते थे। परंतु जब अचानक उनकी नज़र मूर्ति पर पड़ी और उन्होंने मूर्ति पर चश्मा लगा हुआ देखा तो उत्सुकता और खुशी के मारे स्वयं को रोक नहीं सके। उन्होंने तत्काल जीप को रोकने का आदेश दिया।

प्रश्न 10 : 'नेताजी का चश्मा' कहानी हमें क्या शिक्षा देती है?

***अथवा* 'नेताजी का चश्मा' कहानी से प्राप्त संदेश को स्पष्ट कीजिए।**

***अथवा* 'नेताजी का चश्मा' कहानी किस विचार को रेखांकित करती है?**

उत्तर : 'नेताजी का चश्मा' कहानी हमें यह संदेश देती है कि हमें अपने महापुरुषों, देशभक्तों और शहीदों का सम्मान करना चाहिए। हमें कभी भी उनके सम्मान का आडंबर नहीं करना चाहिए। यदि अपने महापुरुषों की मूर्तियों की देखभाल और उनका यथोचित सम्मान नहीं कर सकते तो उनकी मूर्तियाँ स्थापित करके अपनी श्रद्धा और देशभक्ति का आडंबर कदापि नहीं करना चाहिए। यह कहानी हमें यह भी शिक्षा देती है कि देशभक्ति केवल युद्ध लड़ना ही नहीं है, वरन् अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी से करना, देश और समाज की संपत्ति की रक्षा और संरक्षण करना भी देशभक्ति ही है। महापुरुषों का सम्मान, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा और संरक्षण करनेवाले देशभक्तों का हमें कभी उपहास नहीं करना चाहिए; क्योंकि वे ही हमारी सभ्यता, संस्कृति और अस्मिता के ध्वजवाहक हैं, उन्हीं से हमारी पहचान है। हमें कैप्टन चश्मेवाले जैसे लोगों से प्रेरणा लेनी चाहिए न कि पानवाले की तरह उनका मज़ाक उड़ाना चाहिए।

प्रश्न 11 : कैप्टन को देखकर हालदार साहब अवाक् क्यों रह गए?

उत्तर : हालदार साहब की कल्पना में सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला 'कैप्टन' नाम का आदमी खूब लंबा-तगड़ा फ़ौजी जवान था। उन्हें लगा कि उसकी कोई दुकान होगी, जहाँ से चश्मे लाकर वह नेताजी को लगा देता है, परंतु उन्होंने देखा कि कैप्टन नाम का चश्मेवाला बिलकुल मरियल-सा बूढ़ा और लँगड़ा व्यक्ति था। उसके सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा था। उसके एक हाथ में संदूकची और दूसरे हाथ में बाँस पर लटके चश्मे थे। वह घूम-घूमकर चश्मे बेचा करता था; क्योंकि उसके पास कोई दुकान नहीं थी। अपनी कल्पना के विपरीत यह सब देखकर हालदार साहब अवाक् रह गए।

प्रश्न 12 : कैप्टन कौन था? उसे कौन-सी बात आहत करती थी?

उत्तर : कैप्टन कस्बे में रहने वाला एक मरियल-सा बूढ़ा और लँगड़ा व्यक्ति था, जो चश्मे बेचा करता था। उसे यह बात बेहद आहत करती थी कि नेताजी की मूर्ति पर चश्मा नहीं लगा है।

प्रश्न 13 : कैप्टन नेताजी से क्षमा क्यों माँगता था?

उत्तर : कैप्टन चश्मेवाला प्रतिदिन नेताजी की मूर्ति पर एक चश्मा लगा देता था। जब कोई ग्राहक वैसा ही चश्मा माँगता जैसा मूर्ति पर लगा है तो वह उसे उतारकर ग्राहक को दे देता था और उसकी जगह दूसरा चश्मा लगा देता था। ऐसा करते समय वह नेताजी से क्षमा माँग लेता था; क्योंकि उसे बार-बार मूर्ति से चश्मा उतारना और लगाना नेताजी का अपमान लगता था। वह मजबूरीवश ऐसा करता था।

प्रश्न 14 : यदि हालदार साहब को नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगा नहीं मिलता तो उनके मन में किस प्रकार का भाव आता?

उत्तर : हालदार साहब को यदि मूर्ति पर चश्मा लगा हुआ नहीं मिलता तो उनके मन में यही बात आती कि इस कस्बे में सुभाष बाबू का सम्मान करने वाला कोई नहीं है। कस्बे के लोग बेहद स्वार्थी हैं। उन्हें अपने देश के बलिदानी महापुरुषों की मूर्ति लगानी तो आती है, लेकिन उनका सम्मान करना नहीं आता।

प्रश्न 15 : हालदार साहब बार-बार चश्मा बदलने पर व्यंग्य क्यों नहीं करते? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : हालदार साहब बार-बार चश्मा बदलने पर व्यंग्य नहीं करते, वरन् वे यह सोचकर खुश होते हैं कि चलो इस छोटे-से कस्बे के लोगों में भी देशभक्ति की भावना भरी है। यहाँ के लोगों को नेताजी सुभाषचंद्र बोस की परवाह है। वह मन-ही-मन चश्मेवाले की देशभक्ति को प्रणाम करते हैं।

प्रश्न 16 : पानवाला कैप्टन के प्रति कैसा भाव रखता है? ***(CBSE 2017)***

उत्तर : पानवाले की नज़र में कैप्टन एक तुच्छ, सनकी, बेकार-सा और मनोरंजक आदमी है। उसकी नज़र में कैप्टन का नेताजी की मूर्ति को चश्मा पहनाना पागलपन है। वह हालदार साहब को उसकी फोटो अखबार में छपवाने को कहता है, ताकि लोग उसकी सनक के बारे में पढ़कर हँस सकें। वह उसको लँगड़ा और पागल कहकर हँसता भी है। पानवाले के मन में चश्मेवाले की देशभक्ति का कोई सम्मान नहीं है।

प्रश्न 17 : सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देशप्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक जीवन में किसी-न-किसी रूप में देशप्रेम का भाव प्रकट कर सकते हैं–ऐसे किन्हीं दो रूपों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: हम अपने दैनिक जीवन में अनेक काम करके अपनी देशभक्ति का परिचय दे सकते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में बिजली-पानी की बचत करके; पेट्रोल, गैस आदि के रूप में ईंधन की बचत करके देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकते हैं। हम अपने आस-पास की सफ़ाई रखकर, निरक्षरों को साक्षर बनाकर, लोगों को अंध-विश्वासों एवं कुप्रथाओं के चंगुल से मुक्त कराकर, लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाकर भी देश और समाज की सेवा कर सकते हैं।

प्रश्न 18 : 'नेताजी का चश्मा' पाठ में बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगाना क्या प्रदर्शित करता है? ***(CBSE 2019)***

उत्तर: नेताजी की मूर्ति पर बच्चों द्वारा सरकंडे का चश्मा लगाना यह प्रदर्शित करता है कि हमारे देश के बच्चों में भी अपने देशभक्तों के प्रति सम्मान की भावना है; अतः देश का भविष्य उज्ज्वल है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो···' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी, जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानि चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य या सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुकभरी मुसकान फैल गई। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल!

1. **मूर्ति किस चीज़ की बनी थी–**
   (क) लकड़ी की (ख) मिट्टी की
   (ग) संगमरमर की (घ) ताँबे की।
2. **मूर्ति को देखकर क्या याद आने लगता था–**
   (क) 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो···'
   (ख) जय हिंद
   (ग) वंदे मातरम्
   (घ) जय जवान, जय किसान।
3. **मूर्ति में क्या कमी खटकती थी–**
   (क) सुंदर नहीं बनी थी
   (ख) उस पर रंग नहीं किया गया था
   (ग) वर्दी नहीं थी
   (घ) उस पर चश्मा नहीं था।
4. **मूर्ति में नेताजी कैसे लग रहे थे–**
   (क) मासूम और कमसिन (ख) धीर-गंभीर
   (ग) क्रोधित (घ) हँसमुख।
5. **'बस्ट' किसे कहते हैं–**
   (क) बहुत बड़ी मूर्ति को (ख) बहुत छोटी मूर्ति को
   (ग) सिर से आवक्ष मूर्ति को (घ) पूर्ण मूर्ति को।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **'नेताजी का चश्मा' पाठ के लेखक का नाम है–**
   (क) रामवृक्ष बेनीपुरी (ख) स्वयं प्रकाश
   (ग) यशपाल (घ) प्रेमचंद।
7. **हालदार साहब ने कैप्टन चश्मेवाले के बारे में किससे पूछा–**
   (क) हलवाई से (ख) पानवाले से
   (ग) फलवाले से (घ) सब्ज़ीवाले से।
8. **कौन-सी कौम अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है–**
   (क) जो खूब धन कमाती है
   (ख) जो आपस में प्रेम से रहती है
   (ग) जो शहीदों का सम्मान करती है
   (घ) जो शहीदों का उपहास करती है।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर हालदार साहब भावुक क्यों हो उठे?**
10. **कैप्टन कौन था? उसे कौन-सी बात आहत करती थी?**
11. **हालदार साहब बार-बार चश्मा बदलने पर व्यंग्य क्यों नहीं करते?**
12. **'नेताजी का चश्मा' पाठ में बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगाना क्या प्रदर्शित करता है?**